स्कूल के मध्याह्न भोजन का बच्चों के स्वास्थ्य तथा विकास पर पड़ने वाले प्रभाव का विवेचनात्मक अध्ययन (धनबाद जिले के संदर्भ में)

पीएच० डी० पंजीकरण हेतु प्रस्तुत शोध - प्रबंध का सार

स्नातकोत्तर गृह विज्ञान विज्ञान

(सामाजिक विज्ञान संकाय)

बिनोद बिहारी महतो कोयलांचल विश्वविद्यालय, धनबाद (झारखंड)

2024

शोध - निर्देशिका

Seema Kumari

डॉ० सीमा कुमारी

विभागाध्यक्ष

स्नातकोत्तर गृह विज्ञान विभाग

बिनोद बिहारी महतो कोयलांचल

विश्वविद्यालय धनबाद (झारखंड)

शोधार्थी

Madhuri Kumari

माधुरी कुमारी

स्नातकोत्तर गृह विज्ञान विभाग

बिनोद बिहारी महतो कोयलांचल

विश्वविद्यालय धनबाद (झारखंड)

स्कूल के मध्याह्न भोजन का बच्चों के स्वास्थ्य एवं विकास पर पड़ने वाले प्रभाव का विवेचनात्मक अध्ययन

परिचय (Introduction):-

भारत के आजादी के 75 वर्ष बाद भी हमारे देश में गरीबी और भूखमरी जैसी समस्याएं आज भी अधिक मात्रा मे देखी जाती हैं। यहां कई धर्म एवं प्रजाति के लोग अलग- अलग जगहों से आकर एक साथ मिलजूल कर आपसी भाईचारे के साथ रहते हैं। भारत में निवास कर रहे आधे से ज्यादा लोग गरीबी रेखा से नीचे हैं। यहां उच्च वर्ग की तुलना में निम्न और मध्यम वर्ग के लोग अधिक संख्या में रहते हैं। वैसे अगर देखा जाए तो यहां शिक्षा एवं रोजगार के कई साधन उपलब्ध है, परंतु फिर भी यहां अशिक्षा एवं बेरोजगारी अधिक देखने को मिलती हैं। इसका मुख्य कारण भारत के पास मौजूद संसाधनों का उचित ढंग से प्रयोग में न लाना हैं, साथ ही उन्हें प्रयोग में लाने के लिए कुशल व्यक्तियों की कमी भी हैं।

भारत के गांवों के इलाकों में शहरों की तुलना में यह स्थिति और भी दयनीय हैं। यहीं कारण है कि लोग शहरों की ओर ज्यादा पलायन कर रहे है और धीरे धीरे उन इलाकों में शिक्षा का महत्व दिन-ब-दिन घटता ही जा रहा हैं। कुछ परिवारों की हालत इतनी खराब है कि अपने परिवार का भरण - पोषण करने के लिए वो घर के छोटे-छोटे बच्चों को भी अपने साथ काम पर ले जाते हैं। ऐसे में इनका ध्यान उनके शिक्षा एवं स्वास्थ्य पर नहीं हो पा रहा है और इस प्रकार हमारा देश गरीबी एवं अशिक्षा के प्रकोप से मुक्त नहीं हो पा रहा है।

मध्याह्न भोजन योजना भारत सरकार की एक योजना है, जिसका प्रारंभ 15 अगस्त 1995 में किया गया था। इसके अंतर्गत भारत के सभी प्राथमिक और माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों को दोपहर का भोजन नि:शुल्क प्रदान किया जाता हैं। वर्तमान में इसे पीएम पोषण के नाम से जाना जाता हैं। मध्याह्न भोजन योजना का मुख्य उद्देश्य विधालयों में नामांकन की संख्या में वृध्दि करना तथा साथ ही बच्चों को अच्छी एवं उचित शिक्षा के साथ उनके पोषण स्तर में सुधार करना हैं। आए दिन हम अखबारों में पढ़ते हैं कि बाल अपराधों की संख्या बढ रही है तथा उनमें कुपोषण की समस्या अधिक देखने को मिलती हैं। मध्याह्न भोजन योजना बच्चों के लिए “पूरक पोषण” के रूप में कार्य करती हैं।

झारखंड राज्य मध्याह्न भोजन प्राधिकरण का गठन 31 मार्च 2014 को किया गया था। यह सोसायटी पंजीकृत अधिनियम, 1860 के

तहत पंजीकृत सोसायटी है, जिसका उद्देश्य राज्य में मध्याह्न पोषण योजना को लागू करना हैं।

योजना को सुचारू रूप से चलाने के लिए संपूर्ण गतिविधि की निगरानी विभिन्न स्तरों पर गठित विभिन्न समितियों द्वारा की जाती हैं-

1.राज्य स्तर :- झारखंड में पीएम पोषण योजना स्कूल एवं साक्षरता विभाग द्वारा चलाया जाता है, जिसके अध्यक्ष राज्य स्तर पर प्रधान सचिव होते हैं।

2.जिला स्तर:- जिला स्तर पर इस योजना को शिक्षा अधीक्षक एमडीएम के कार्यान्वयन के लिए जिम्मेदार हैं।

3.ब्लॉक स्तर:- इस स्तर पर इस योजना के कार्यान्वयन के लिए ब्लॉक शिक्षा जिम्मेदार हैं।

4.स्कूल स्तर:- इस स्तर पर इस योजना को कार्यान्वयन के लिए सरस्वती वाहिनी स्कूल एजेंसी कार्य करती हैं। यह स्कूल प्रबंधन समिति की एक उपसमिति है और वें महिलाएं शामिल की जाती हैं, जिनके बच्चें उस स्कूल में पढ़ रहे होते हैं।

विधालयों में मध्याह्न भोजन रसोइया द्वारा बनाया जाता है, जिसकी निगरानी विधालय प्रबंधन समिति के अध्यक्ष द्वारा की जाती है। भोजन बच्चों के बीच परोसने से पहले शिक्षकों द्वारा इसकी जांच पड़ताल की जाती है, फिर उन्हें बच्चों के प्लेटों में परोसा जाता हैं। स्कूल में भोजन तैयार करने और वितरण के लिए 79591 रसोइया -सह - सहायक कार्यरत हैं।

इस शोध कार्य का प्रकार प्रयोगात्मक या परीक्षणात्मक तथा तुलनात्मक होगा।

समस्या का कथन(statement of the problem):-

मध्याह्न भोजन योजना सरकार की एक बहुत अच्छी एवं विश्वसनीय योजना है, परंतु साथ ही इसकी कुछ समस्याएं भी हैं, जिसके कारण कई इलाकों में इस योजना का लाभ जरूरतमंद लोगों तक पहुंच नहीं पा रही हैं।

- राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण 2015-16 के अनुसार 39% स्कूली विद्यार्थी काफी समय से कुपोषण के शिकार हैं।

- भोजन की गुणवत्ता पर आए दिन विवाद होते रहते हैं, कई सोशल मीडिया रिकॉर्ड में इस योजना के तहत परोसे जाने वाले भोजन के चलते बच्चों के स्वास्थ्य बिगड़ने की खबर सामने आती है। जिसका मुख्य कारण भोजन पकाते समय साफ सफाई को ध्यान नहीं रखना है।

- सरकार द्वारा दी जा रही धनराशि, जो पूर्ण रूप से इस योजना पर खर्च होने चाहिए, वह किसी अन्य कार्य में खर्च किए जा रहे हैं।

- बच्चे लालच एवं भुखमरी के कारण स्कूल तो आते हैं परंतु इससे उनकी शिक्षा पर कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ रहा है।

- खाना पकाने एवं परोसने वाले को कम वेतन मिलने की वजह से वह भोजन पकाते समय लापरवाही करते हैं, जिससे बच्चे योजना से मिलने वाले पौष्टिक तत्वों से वंचित रह जाते हैं।

- इस योजना के अंतर्गत दिए जा रहे भोजन की सामग्रियों के गुणवत्ता ठीक न होने के कारण बच्चों में इसका नकारात्मक प्रभाव देखने को मिल रहा है, जिसका प्रभाव उनके स्वास्थ्य एवं भविष्य दोनों पर पड़ रही है।

साहित्य समीक्षा (Review of Literature):-

शोध कार्य करने से पहले शोध विषय के संबंध में प्रारंभिक तथा पूर्व में हुए अध्ययनों का ज्ञान होना आवश्यक है। इससे शोधकर्ता के कार्य कुछ सरल हो जाते हैं। इसके अध्ययन से विभिन्न प्रविधियां की जानकारी मिलती है और शोध कार्य में होने वाली कठिनाइयों का पता चल जाता है।

प्रस्तुत शोध अध्ययन विषय पर पूर्व से कुछ अध्ययनों एवं सर्वेक्षणों का संक्षिप्त कर प्रस्तुत है:-

- भारत सरकार **(2013)1** की रिपोर्ट के अनुसार 10 दिनों के सर्वे के दौरान यह पाया गया कि बच्चों का पौष्टिक स्तर गिरता हुआ नजर आया। जिन बच्चों को भोजन प्रतिदिन नहीं मिलता है। खाने के लिए बर्तन बच्चों को घर से लाने पड़ते हैं। बच्चों को हैंडपंप का पानी मिल रहा है जो स्वच्छ नहीं है। बच्चों के लिए शौचालय उपलब्ध नहीं है अगर है तो पानी की व्यवस्था नहीं है और रिपोर्ट में पाया कि मध्यान भोजन योजना में प्रयोग होने वाली वस्तुओं की सुरक्षा नहीं है।

- डर्मा के अनुसार **(2003)2** मध्याह्न भोजन योजना के अंतर्गत बच्चों के विद्यालय आने की प्रवृत्ति तो जागृत हुई है किंतु भोजन व्यवस्था में सुधार नहीं हो पा रहा है। बच्चों का ध्यान खाने की और अधिक आकर्षित है। बड़े केंद्रीय वित्त पोषित योजना जो सरकारी प्राथमिक स्कूलों में छात्रों के लिए एक बार भोजन प्रदान करना है। 110000000 बच्चों को हर रोज भोजन उपलब्ध कराया जा रहा है। बच्चों को पोषण व शिक्षा प्रदान करता है।

- दत्ता के अनुसार **(2015)3** स्कूलों में मध्यान भोजन योजना के राष्ट्रीय कार्यक्रम प्राथमिक शिक्षा के सार्वभौमीकरण के उद्देश्य के साथ नवंबर 1995 के बाद राज्य में लागू करने के तहत किया गया है। उपस्थित बच्चों के स्वास्थ्य में सुधार तथा बच्चों के सीखने के स्तर में सुधार और बच्चों को पोषण प्राप्त होगा।

- देवघर के अनुसार **(2007)4** ने प्राथमिक और द्वितीयक आंकड़ों का इस्तेमाल किया है, इन्होंने स्कूलों और रसोई में स्वच्छता और साफ सफाई पर शोध किया है। उन्होंने निष्कर्ष निकला कि मध्याह्न भोजन योजना के अंतर्गत साफ-सफाई का विशेष ध्यान नहीं रखा जा रहा है।

- पाल के अनुसार **(2012)5** उन्होंने प्राथमिक और द्वितीयक आंकड़ों का प्रयोग किया। इनका उद्देश्य मध्याह्न भोजन व्यवस्था तक पहुंचाना तथा ग्रामीण और शहरी क्षेत्र में इसके प्रभाव को देखना।

- एस . एस मित्तल **(1985)6 "Impact of midday meal program and attendance at primary stage"** के अनुसार मध्याह्न भोजन योजना का प्राथमिक स्तर पर सकारात्मक प्रभाव पड़ा हैं। इसके कारण नामांकन में भी वृद्धि हुई है।

- ज्योत्सना पाण्डेय (2008)7 " **Expansion of elementary education is south Rajasthan with special reference to fribal district** " के अनुसार मध्याह्न भोजन योजना के परिणामस्वरूप शोध क्षेत्र के पूर्व माध्यमिक विद्यालयों में बच्चों के नामांकन में लगातार वृद्धि हुई । प्राथमिक विद्यालयों में बच्चों के नामांकन में लगातार वृद्धि हुई है। प्रधानाध्यापकों के अनुसार मध्याह्न भोजन योजना के कारण प्राथमिक विद्यालयों में छात्रों की उपस्थिति बढ़ी हैं।

- राजेश टेलर **(2005)8** ने अपने शोध पत्र " प्राइमरी एजूकेशन फेसिलिटी इन बिहार " में लिखा है कि अधिकांश प्राथमिक विद्यालयों में आधारभूत सुविधाओं का अभाव हैं।

- नित्यानंद प्रधान (**2004)9** ने अपने शोध पत्र " एजूकेशन ऑफ आउट ऑफ स्कूल ट्राइबल गर्ल्स" में स्कूल में नामांकन करा पाने वाली आदिवासी बालिकाओं की शैक्षिक स्थिति पर प्रकाश डाला हैं।

- नेहा पुष्पद **(2008-09)10** ने अपने लधु शोध " मध्याह्न भोजन का विद्यार्थियों के स्वास्थ्य एवं शैक्षणिक उपलब्धि स्तर पर पड़ने वाला प्रभाव " में बताया कि मध्याह्न भोजन योजना का बालको एवं बालिकाओं के स्वास्थ्य पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता हैं तथा साथ ही मध्याह्न भोजन योजना का बालको एवं बालिकाओं के शैक्षणिक उपलब्धि स्तर पर भी कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता हैं।

समस्या की जांच (Problem to be investigated):-

वर्तमान समय में एक और जहां शिक्षा का महत्व एवं विस्तार लगभग सभी क्षेत्रों में बढ़ता जा रहा है, वहीं इसकी अवस्था दिन-ब-दिन बिगड़ती जा रही है। आए दिन हम रोज अखबारों के माध्यम से इस अवस्था को अपने सामने पाते हैं। जिले के सभी सरकारी स्कूलों में सरकार द्वारा चलाए जा रहे इस योजना का मुख्य उद्देश्य स्कूलों में बच्चों के नामांकन संख्या में वृद्धि करने के साथ-साथ उनके पोषण स्तर में भी सुधार लाकर उनके भविष्य को मजबूत बनाना है, परंतु सरकार का यह उद्देश्य अधूरा रहा है, क्योंकि जिले में गरीबी रेखा के नीचे रहने वाले परिवारों की संख्या ज्यादा होने के कारण भुखमरी जैसी समस्या अधिक देखने को मिल रही है। अपने पेट की भूख को शांत करने के लिए बच्चे स्कूल में नामांकन तो करवा रहे हैं परंतु उनके पोषण

स्तर में सुधार देखने को नहीं मिल रही है। इसका कारण स्कूल की व्यवस्था है जो सही ढंग से कार्य नहीं कर रही है। सरकार द्वारा चलाए जा रही इस योजना का लाभ पूर्ण रूप से बच्चों के स्वास्थ्य पर नहीं पड़ रहा है, क्योंकि इस योजना के अंतर्गत दी जाने वाली भोज्य सामग्री उच्च कोटि के बजाय निम्न कोटि की होती है, जिससे बच्चों का सिर्फ पेट ही भर पता है। इससे उनके शारीरिक और मानसिक विकास पर उतना अच्छा प्रभाव नहीं पड़ रहा है। यही कारण है कि जिले के पब्लिक स्कूलों के बच्चे सरकारी स्कूलों के बच्चों से ज्यादा अव्वल होते हैं। उनका हर तरह से उचित विकास होता है क्योंकि उनके पास धन और व्यवस्था की कोई कमी नहीं है। पब्लिक स्कूलों के बच्चों का पालन पोषण सही वातावरण तथा देखरेख में होती है। उन्हें सही मार्गदर्शन के साथ-साथ उचित सुविधा प्राप्त है जो कि जिले के सरकारी स्कूलों के बच्चों को प्राप्त नहीं हो पाती है। मध्याह्न भोजन योजना सरकार की एक बहुत अच्छी पहल साबित हो सकती है, लेकिन उसके लिए योजना को सुचारू रूप से चलने के लिए उचित व्यवस्था, निगरानी एवं विश्वसनीय कर्मचारियों की आवश्यकता है। इस योजना से संबंधित हर व्यक्ति को इस जिम्मेदारी को अपने बच्चों के प्रति निभाने की दृष्टिकोण होनी चाहिए। उन्हें बिल्कुल भी महसूस नहीं करना चाहिए कि वह दूसरे के बच्चों के लिए इस कार्य को कर रहे हैं बल्कि उनकी मानसिकता ऐसी होनी चाहिए कि यह उनके स्वयं के बच्चों का कार्य है और इसे पूरी निष्ठा तथा ईमानदारी के साथ निभाया जाए।

वर्तमान विषय में मध्याह्न भोजन का बच्चों के शिक्षा एवं उनके पोषण स्तर पर पड़ने वाली समस्याओं पर एक गहन अध्ययन एवं समाधान के विकल्पों की अनुशंसा की जाएगी।

शोध का उद्देश्य (Objectives):-

प्रस्तावित शोध कार्य के मुख्य उद्देश्य निम्नलिखित है:-

- धनबाद जिले के सरकारी स्कूलों में बच्चों के नामांकन स्तर को ऊपर लाना।
- बच्चों के मध्य लिंग भेद को समाप्त करना।
- बच्चों के पोषण स्तर पर विशेष ध्यान देकर उन्हें भविष्य के लिए तैयार करना ।
- सरकारी स्कूलों के बच्चों में शिक्षा के स्तर को ऊंचा करना।

- सरकार के कार्यों में सहयोग की आड़ में भ्रष्टाचार करने से रोकना।

- सरकारी स्कूलों में पढ़ रहे बच्चों के अभिभावकों को उनके अधिकारों और कर्त्तव्यों के प्रति जागरूक करना।

परिकल्पना (Hypothesis):-

- धनबाद जिले के सरकारी स्कूलों में बच्चों का नामांकन निम्न है।

- बच्चों के मध्य लिंग भेद विद्‌यमान है।

- बच्चों का पोषण - स्तर निम्न है।

- सरकारी स्कूलों के बच्चों की शिक्षा का स्तर निम्न हैं।

- सरकार के कार्यों में सहयोग की आड़ में भ्रष्टाचार का स्तर अपनी चरम सीमा पर है।

- सरकारी स्कूलों में पढ़ रहे बच्चों के अभिभावकों को अपने अधिकारों एवं कर्तव्यों की जानकारी का अभाव है।

शोध में उठने वाले संभावित प्रश्न (Questions to be raised during research):-

मध्याह्न भोजन योजना का बच्चों के स्वास्थ्य पर पड़ने वाले प्रभाव के संदर्भ में कुछ प्रश्न उभर कर सामने आते हैं, जिनका अध्ययन किया जा सकता है।

- मध्याह्न भोजन योजना के अंतर्गत आने वाले लाभार्थियों का पोषण स्तर कैसा है?

- इस योजना के अंतर्गत आने वाले बच्चों का शिक्षा स्तर कैसा है?

- मध्याह्न भोजन योजना के द्वारा जिले के सरकारी स्कूलों में बच्चों के नामांकन दर में कितनी वृद्धि हुई है?

- इस योजना के परिणामस्वरूप वर्तमान समय में बच्चे तथा उनके अभिभावकों की क्या दृष्टिकोण है?

- मध्याह्न भोजन योजना को सही एवं सुचारु ढंग से कार्यन्वयन करने में क्या-क्या कठिनाई आ सकती है?

शोध अभिकल्प एवं शोध प्रविधि (Research design, Research Methodology and Research tools):-

इस शोध कार्य में वर्णनात्मक और तुलनात्मक शोध प्रविधियां का प्रयोग मध्याह्न भोजन योजना में बच्चों के स्वास्थ्य तथा विकास पर पड़ने वाले प्रभाव को जानने के लिए किया जाएगा, जिसमें बालक तथा बालिकाओं की उम्र 5-10 वर्ष ली जाएगी। शोधार्थी द्वारा वर्तमान समय में मध्याह्न भोजन योजना की अवस्था एवं इसका बच्चों के स्वास्थ्य तथा विकास पर प्रभाव एवं इसकी समस्या का विश्लेषण किया जाएगा। तथ्य संग्रहण के लिए प्राथमिक तथा द्वितीय स्त्रोतों का प्रयोग किया जाएगा।
तुलनात्मक प्रविधि में शोधार्थी द्वारा 5-10 वर्ष के बालक तथा बालिकाओं में तुलनात्मक अध्ययन किया जाएगा।

क्षेत्र का चुनाव:-

प्रस्तावित शोध अध्ययन का क्षेत्र झारखंड राज्य के धनबाद जिले का चयन किया जाएगा।

प्रतिदर्श का चयन:-

इसमें प्रतिदर्श का आकार 300 बालक तथा बालिकाओं का होगा, जो सरकारी स्कूलों में पढ़ रहे हैं। जिसमें प्रतिदर्श का चयन सोद्देश्य नमूना तथा स्तरीकृत प्रतिचयन के आधार पर किया। जाएगा ।

प्रतिदर्श:-

बालक एवं बालिका (5-6)-100

बालक एवं बालिका (7-8)-100
बालक एवं बालिका (9-10)-100

तथ्य संग्रहण में प्रयुक्त उपकरण:-

(क) स्वनिर्मित साक्षात्कार - अनुसूची इसमें सूचनादाता के व्यक्तिगत, सामाजिक, आर्थिक एवं स्वास्थ्य से संबंधित विभिन्न सूचनाओं संबंधित प्रश्न होंगे।

(ख) मानवमिति परिक्षण उंचाई, वजन , उम्र तथा बाजू का नाप लिया जाएगा।

(ग) लक्षण परीक्षण विधि को शामिल किया जाएगा, जिसमें सूचनादाता के विभिन्न लक्षण अंकित किए जाएंगे।

(घ) आहारीय सर्वेक्षण - भोजन के अंतर्गत प्रतिदिन दिए जाने वाले आहार तालिका को शामिल किया जाएगा।

इस प्रकार आंकड़े संग्रहण में साक्षात्कार, अनुसूची, अवलोकन विधियों का प्रयोग किया जाएगा।

आंकड़ों का विश्लेषण:-

प्राथमिक तथा द्वितीय दोनों प्रकार के आंकड़ों का प्रयोग किया जाएगा।

प्रारंभिक आंकड़े:-

साक्षात्कार - सर्वप्रथम बच्चों से मिलेंगे और उनका साक्षात्कार करेंगे।

अवलोकन - अध्ययन क्षेत्र में जाकर स्कूलों के प्रबंधन व्यवस्था का निरीक्षण कर उनके वास्तविकता को जानेंगे।

प्रश्नावली - एक प्रश्नावली तैयार करेंगे जिसमें स्कूलों में दिए जा रहे मध्याह्न भोजन से संबंधित प्रश्न होंगे।

द्वितीय आंकड़े:-

- पत्र - पत्रिकाएं
- इंटरनेट
- शोध अध्ययन से संबंधित पुस्तकें
- शोध प्रबंधन व प्रतिवेदन

तत्पश्चात सांख्यिकीय वीडियो द्वारा प्रतिशत केंद्रीय प्रवृत्ति प्राप्त कर उसका विश्लेषण किया जाएगा। विभिन्न प्रकार के चार्ट आयात आदि द्वारा प्राप्त आंकड़ों mean, standard deviations,t-test, product Moment, Co-Relation. इत्यादि सांख्यिकी विश्लेषण विधियों का इस्तेमाल किया जा सकता है, जिससे तुलनात्मक अध्ययन में सुविधा होगी।

शोध का महत्व (Significance of Research):-

मेरे द्वारा किए गए इस शोध कार्य का महत्व लगभग सभी क्षेत्रों में देखने को मिलेंगे, क्योंकि हम सभी इस बात की सत्यता से वंचित नहीं है कि बच्चे हमारे देश के उज्जवल भविष्य हैं और उन्हें उचित पोषण के साथ-साथ अच्छी शिक्षा प्रदान करना हम सब का प्रमुख कर्तव्य है।

इस शोध कार्य का महत्व वर्तमान के साथ-साथ उनके आने वाले भविष्य में भी अच्छे परिणाम के रूप में साबित होंगे। बच्चों का स्वास्थ्य सही होगा तभी उनका शारीरिक एवं मानसिक विकास उचित ढंग से होगा। अगर उनकी शिक्षा एवं स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान दिया जाए तो इस समस्या से निजात पाया जा सकता है। स्कूलों की जो अवस्था है उसे देखते हुए इस शोध कार्य का महत्व और भी बढ़ जाता है। वर्तमान की स्थिति इतनी भी खराब नहीं हुई है कि इसे सुधार न जा सके। इसके लिए सरकार द्वारा उचित और कड़े नियम लागू कर एवं उनका सही ढंग से पालन कर इस स्थिति को सुधारा जा सकता है। इसके लिए सरकार को समस्या के हर पहलुओं पर विचार विमर्श करके उस पर विशेष ध्यान देने की जरूरत है। स्कूलों के प्रबंधनों पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। आने वाले समय में अगर इस स्थिति पर नियंत्रण नहीं पाया गया तो यह एक विकराल रूप ले सकता है और देश का भविष्य खतरे में पड़ सकता है। आने वाले समय में दुनिया जिस रफ्तार से आगे बढ़ रही है, उसे देखते हुए शिक्षा का महत्व प्रत्येक के लिए बहुत बढ़ जाता है।

यहां बिना पढ़े लिखे व्यक्तियों को न के बराबर समझा जाएगा। उसके जीवन यापन में बहुत सी कठिनाइयां आ सकती है। यह बस सिर्फ उनके लिए ही नहीं बल्कि देश के लिए भी चिंता का विषय है क्योंकि आने वाले समय में जहां डॉक्टर, इंजीनियर , शिक्षक, सैनिक इत्यादि की ज्यादा जरूरत होगी वही उनके आंकड़े काम होते नजर आएंगे क्योंकि इनका आधार कमजोर होने के वजह से आज इनकी संख्या में कमी आई है।

मौजूदा ज्ञान के लिए योगदान (Contribution of the existing knowledge):-

मध्याहन भोजन योजना भारत के लगभग सभी राज्यों में चलाए जा रहे हैं। जिसका मुख्य उद्देश्य भारत के सभी राज्यों के प्राथमिक व माध्यमिक स्कूलों में पढ़ रहे बच्चों को अच्छी शिक्षा के साथ-साथ अच्छा पोषण देना है।

वर्तमान समय में शिक्षा का महत्व जिस प्रकार से सभी क्षेत्रों में बढ़ रहा है उसे यह अंदाजा लगाया जा सकता है कि भविष्य में इसके बिना हमारी आने वाली पीढ़ी पर क्या प्रभाव पड़ सकती है। शिक्षा की मदद से ही हम अपने जीवन को समृद्ध बना सकते हैं। ऐसे में मध्याहन भोजन योजना की समस्याओं को हल करना हम सबके लिए बहुत जरूरी हो जाती है। इस योजना में होने वाली गड़बड़ी को ठीक करना हम सभी का कर्तव्य है और इस कर्तव्य का पालन हम निस्वार्थ भाव से तभी कर सकते हैं जब हम इन समस्याओं को अपने निजी समस्या समझेंगे। सरकार की मदद कर हम न सिर्फ बच्चों का भविष्य बेहतर बना सकते हैं बल्कि भारत का भविष्य भी उज्ज्वल बना सकते हैं जो कि अंधकार में जाती हुई नजर आ रही है। हम सबके बेहतर कल के लिए बच्चों की नींव मजबूत करना बहुत जरूरी हो जाती है। ऐसे में अच्छी शिक्षा के साथ-साथ स्वस्थ आहार बच्चों के शारीरिक एवं मानसिक विकास को प्रभावित करती है। सभी पोषण उनके शरीर को मजबूत तथा रोग मुक्त बनाते हैं जो उनके आने वाले जीवन के लिए बहुत जरूरी होती है।

मध्याहन भोजन योजना से संबंधित समस्याओं का बच्चों के व्यक्तिगत जीवन, समाज, देश तथा दुनिया पर पड़ने वाले प्रभाव आज शोध का एक ज्वलंत विषय हैं। इस विषय पर किये गए पूर्व शोध कार्यों में शोधार्थी द्वारा प्रस्तुत वर्तमान शोध कार्य, “स्कूल के मध्याहन भोजन का बच्चों के स्वास्थ्य पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन: झारखंड राज्य के धनबाद जिले

के क्षेत्र के संदर्भ में ” निहित अध्ययन, सुझाव तथा निरीक्षण से संबंधित बातें इस योजना के लिए अवश्य लाभकारी होगें।

भविष्य के कार्य (Future Work):-

किसी भी व्यक्ति विशेष की आत्मनिर्भरता सिर्फ सुदृढ़ीकरण देने की पहल की सोच नहीं अपितु यह आपके आत्मविश्वास को बनाए रखने का अहम बिंदु है।

भारत जैसे विशाल देश में जहां शिक्षा एवं रोजगार के कई साधन उपलब्ध है, वहीं इसका उचित ढंग से प्रयोग में न लाकर ग्रामीण जीवन के साथ-साथ शहरी जीवन भी पिछड़ता जा रहा है और लोग विदेश की तरफ ज्यादा पलायन कर रहे हैं। हमें विदेश की तरफ क्यों जाना पड़ रहा हैं। जब हमारे भारत की धरोहर में रोजगार के कई साधन मौजूद हैं। बस इस साधनों के उचित इस्तेमाल से ही हम अपने कल को बेहतर बना सकते हैं। बच्चों को अच्छा प्रशिक्षण देकर हम देश और विदेश की दूरी को कम कर सकते हैं। न सिर्फ प्राइवेट कंपनी ही अच्छी व्यवस्था और प्रशिक्षण प्रदान करती है बल्कि सरकारी कंपनियां भी अच्छी प्रशिक्षण देकर हमारे कौशल को बढ़ा सकती है। बस इसके लिए कुशल एवं प्रशिक्षित व्यक्तियों की आवश्यकता है जो कि शिक्षा के माध्यम से प्राप्त हो सकते हैं। अतः हमें बेहतर शिक्षा उपलब्ध कराने के लिए नियम लागू करने होंगे तथा शख्ती से उनका पालन करने होंगे।

शोधार्थी द्वारा “स्कूल के मध्याह्न भोजन का बच्चों के स्वास्थ्य एवं विकास पर पड़ने वाले प्रभाव का विवेचनात्मक अध्ययन: झारखंड राज्य के धनबाद जिले के क्षेत्र के संदर्भ में” इस विषय पर अध्ययन धनबाद में किया जा रहा है। अन्य विषयों पर भी इससे संबंधित अध्ययन जारी है, लेकिन वर्तमान में इस अध्ययन को पूरे देश में एक मुहिम की तरह लागू करने की आवश्यकता है। इस समस्या के निदान से ही हमारे देश के सरकारी स्कूलों के बच्चों का स्वास्थ्य एवं सही पोषण स्तर संभव है। एक शिक्षित व्यक्ति ही एक शिक्षित समाज का निर्माण कर सकती है।

प्रस्तावित शोध के संभावित अध्याय (Chapterization):-

अध्याय 1 - परिचय

शोध का महत्व

मध्याह्न भोजन योजना का परिचय।

बच्चों का स्वास्थ्य।

मध्याह्न भोजन योजना की समस्या।

बच्चों का पोषण स्तर।

मध्याह्न भोजन योजना एवं बच्चों के स्वास्थ्य का संबंध।

शोध का उद्देश्य।

परिकल्पना।

अध्याय 2 - साहित्य समीक्षा

अध्याय 3 - शोध प्रविधि

अध्याय 4 - परिणाम एवं विश्लेषण

अध्याय 5 - सारांश एवं निष्कर्ष

निष्कर्ष(conclusion):-

इस शोध कार्य के उपरांत मेरा यह निष्कर्ष निकला , कि धनबाद जिले के लगभग सभी सरकारी स्कूलों की व्यवस्था अच्छी नहीं है । मध्याह्न भोजन योजना की शुरुआत सरकार जिस उद्देश्य से कर रही है उसका पूरा लाभ न तो सरकार तक पहुंच पा रही है और न ही बच्चों को वह लाभ मिल पा रही है । स्कूलों में नामांकन की संख्या तो बड़ी है परंतु उसका लाभ बच्चों के

स्वास्थ्य एवं उनके शैक्षणिक स्तर पर नहीं मिल पा रही है। जिले में भुखमरी जैसी समस्या ज्यादा होने के कारण बच्चे लालच से स्कूल जाते हैं न कि उनमें पढ़ने की ललक जागृत हुई है। उम्र की इस अवस्था में शिक्षा के प्रति उनका झुकाव कम होने का विशेष कारण उनका मानसिक विकास है जो संतुलित भोजन न मिल पाने के कारण अधूरा है। बच्चों का तन और मन दोनों स्वस्थ रहना चाहिए तभी वह भविष्य के लिए अपने आप को तैयार कर पाने में सक्षम हो सकेंगे।

सरकार द्वारा उचित कदम उठाने के बाद भी बच्चों को सुविधा से वंचित रहना पड़ रहा है इन सुविधाओं से वंचित रहने की जो कड़ी है, उन सभी कड़ियों को ढूंढ निकालना एवं उसका निवारण करना ही मेरे शोध का प्रमुख उद्देश्य रहेगा।